सच्ची नमाज़

साथ
नियत नामा

मअ तरीक़ा-ए-फ़ातिहा

jilानी बुक डिपो
1229 चूड़ी वलान
जामा मस्जिद, दिल्ली-6

Scanned with CamScanner

जीलानी सच्ची नमाज़

साथ

नीयत नामा

मअ

तरीक़-ए-फ़ातिहा

मुरत्तिब

मौलाना मोहम्मद रजब अली कादरी

हस्बे फ़रमाईश

(हाफिज़) मशकूर अहमद अशरफी

नाशीर

जीलानी बुक डिपो 523, मटिया महल जामा मस्जिद देहली

Scanned with CamScanner

कहां क्या है

शुमार	उनवान	सफहा
1.	इस्लामी कलमें	04
2.	गुस्ल का बयान	09
3.	तयम्मुम का बयान	12
4.	इस्तीनजा का बयान	15
5.	मिस्वाख का बयान	16
6.	वज़ू का तरीका	17
7.	नमाज और वक्त	22
8.	अजान का बयान	23
9.	अजान के बाद की दुआ	23
10.	नमाज पढने का सबसे आसान तरीका	25
11.	नमाज के बाद की दुआ	31
12.	दुआए कुनूत	32
13.	सुरए फातेहा और 10 सुरते	33
14.	नमाज की तरकीब	37
15.	आयतल कुर्सी	40
16.	फज्र की नमाज	41
17.	जोहर की नमाज	41
18.	अस्र की नमाज	42
19.	मगरिब की नमाज	42
20.	इशा की नमाज	42
21.	जुमा की नमाज	43
22.	मुसाफिर की नमाज	43
23.	बिमार की नमाज	44
24.	दुआ में क्या मांगना चाहिए	44
25.	नमाजे तरावीह	44

Scanned with CamScanner

26.	ईद की नमाज	45
27.	वकरईद की नमाज	46
28.	नमाजे जनाजा का तरीका	47
29.	फातेहा का मुकम्मल तरीका	50
30.	इसाले सवाव का तरीका	52
31.	फातेहा कव कव ।देलाएं	54
32.	सवाव पहुंचाने का तरीका	59
33.	शवेकद्र की फजिलत	59
34.	शवेकद्र के वजाएफ	60
35.	जानवर जवह करने का तरीका	60
36.	जानवर जवह करने की नियत	60
37.	दुआऐ अकीका	61
38.	कुर्वानी का वयान	61
39.	दरुदे जुमा	62
40.	फजाएल व फवाएद	63
41.	दुनिया व आखेरत की कामयावी की दुआ	64
42.	पानी पीने का वयान	69
43.	लिवास पहनने का वयान	69
44.	जिनत श्रृंगार का वयान	70
45.	सोने का वयान	71
46.	फातेहा का आसान तरीका	72
47.	मुनाजाते मकबुल	73
48.	औकाते नमाज व तादाते रकाअत	74
49.	लौहे कुर्आनी हिन्दी में	75
50.	लडकी के रिश्ता लगने की दुआ	76
51.	रिश्ता लगने का नक्श	76
52.	तसवीर जमाअत के साथ	77
53.	दुकान खोलने की दुआ	80
54.	मदरसा तेगीया ताजुल मदारिस	80

Scanned with CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस्लाम की बुनियाद

इस्लाम की बुनियाद पांच बातों पर है :-

1. कलम-ए-तैय्यब-यानि सच्चे दिल से समझकर इसका पढा जाना।
2. नमाज-यानी पाक-साफ होकर पांच वक्त की नमाज पढना।
3. रोजा-यानी हर रमजान के महीने के रोजा रखना।
4. हज-यानी पाक कमाई से, सारी उम्र में कम से कम एक बार मक्का-शरीफ में जाकर हज करना।
5. जकात-यानि अपनी कमाई से हर साल चालीसवां हिस्सा निकाल कर गरीबों, दुखियारों और मुहताजों में बांटना।
6. रोजा हज और जकात के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए दूसरी किताबों में देखें।

यहां सिर्फ कलमा तैय्यब और नमाज के बारे में जरुरी बातें बताई जा रही है जिसको जानना और उस पर अमल करना हर मुसलमान के लिए जरुरी है। मुसलमान बनने के लिए कलमा तैय्यब

Scanned with CamScanner

पढना और उसको दिल से मानना निहायत जरुरी है। यह कलमे छः किस्म के हैं। इस सबको जवानी याद कर लेना चाहिए। इन कलमों के पढने का बडा सवाब है।

छः कलमें

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

पहला कलमा तैय्यब

लाइला–ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह।

तर्जुमा–नहीं है कोई इबाद के लायक, अलावा खुदा के, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

दूसरा कलमा शहादत

अशहदु अल्ला इला–ह इल्लल्लाह वह्दहू लाशरीकलहू व अशहदु अन–न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

तर्जुमा–मैं गवाही देता हूं कि नहीं है कोई इबादत के लायक, अल्लाह के अलावा, वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उस के बन्दे और रसूल हैं।

Scanned with CamScanner

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

तीसरा कलमा तम्जीद

सुब्हानल्लाहि वल्हम्द लिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहू वल्लाहो अकवरो वला हो-ल वला कू-व त इल्ला विल्लाहिल अलीयिल अजीम।

तर्जुमा-अल्लाह पाक है और सब तारीफ अल्लाह के लिए है और कोई इबादत के लायक नहीं है सिवा अल्लाह के और अल्लाह सब से बडा है और ताकत और कूवत नहीं है मगर बुलन्द व बुजुर्ग खुदा की तौफीक से।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ
وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ اَبَدَ الْاٰبَادِ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

चौथा कलमा तौहीद

लाइला-ह इल्लल्लाहु वह दहू लाशरी-क लहु व लहुल मुल्को व लहुल हम्दु युहूयी व युमीतु व हु-व हय्युल्ला यमूतु अ-व-दन अ-व-दा जुल्जलालि वल्इक्रामि वियदिहिल खैरु व हु व अला कुल्लि शैयइन कदीर।

Scanned with CamScanner

तर्जुमा–नहीं है कोई इबादत के लायक, अल्लाह के अलावा वह एक है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी का सब मुल्क है और उसी के लिए सब तारीफ है, जिलाता है और मारता है, अच्छाई और बरकत उसी के हाथ में है और वह हर चीज पर कुदरत रखता है।

أَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ أَذْنَبْتُهُ عَمَدًا أَوْ خَطَأً سِرًّا أَوْ عَلَانِيَةً
وَأَتُوْبُ إِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ أَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَا أَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ
عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

पांचवा कलमा इस्तगफार

अस्तगफिरुल्ला–ह रब्बी मिन कुल्लि जंबिव अज नब्तुहू अम–दन औ ख–त–अन सिर्रन औ अलानियतंव व अतूबो इलैहे मिनजम्बिल–लजी आअलमो व मिनज्जम्बिलजी ला आलमु इन–न–क अन–त अल्लामुल गूयूबि व सत्तारुल उयूबि व गफ्फारुज–जुनूबे वला हौ–ल वला कू–व–त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अजीम।

तर्जुमा–मैं अल्लाह से माफी मांगता हूं जो मेरा परवर दिगार है, हर गुनाह से जो मैंने किया, जान–बूझ कर या भूल कर, छिपे या खूले और मैं तौबा करता हूं उस के हुजूर

Scanned with CamScanner

में उस गुनाह से, जो मैं जानता हूं और उस गुनाह से जो मुझे मालूम नहीं। वेशक तू गैबों का जानने वाला है और ऐवों का छिपाने वाला है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَیْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِیْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِیْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا اَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ وَاَقُوْلُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

छठा कलमा रद्दिद कुफ्र

अल्लाहुम्म–इन्नी अऊजुवि–क मिन अन उश्रि–क वि–क शेयअंव–व अना आलमु बिही व अस्तग्फिरु–क लिमा ला आलमु बिही तुब्तु अन्हु व तवर्रातु मिनल कुफ्रि वश–शिर्कि वल किजबे वलगीवते वल विद अते वन्न मिमते वलफवाहेशे वलवुहताने वलमआसी कुल्लिहा व अस्लम्तु व अकूलु ला इला ह इल्लल्लाहो मुहम्मदुर रसूलुल्लाह।

तर्जुमा–ऐ अल्लाह, वेशक पनाह मांगता हूं, तुझ से इस से कि शरीक करुं तेरे साथ किसी चीज को, जिसे मैं जानता हूं। मैं तुझ से उस के लिए मग्फिरत चाहता हूं जिसे मैं नहीं जानता हूं, मैंने उस से तौबा की और कुफ्र औ शिर्क और तमाम गुनाहों से बाज आया। मैंने इस्लाम कुबूल किया,

Scanned with CamScanner

ईमान ले आया और मैं कहता हूं कि खुदा के सिवा कोई इवादत के लायक नहीं, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ

ईमाने मुजम्मल

आमन्तु विल्लाहि कमा हु-व वि अस्माइली व सिफा-तिही व कविल्तु जमीआ अह् कमिही। इकरा रेल्लोसानेही वतस्दिकुन विल कल्व।

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

ईमाने मुफस्सल

आमन्तु विल्लाहि व मलाई कतिहि व कुतुविही व रुसुलिही वल यौमिल आखिरे वलकदरे खैरिही व शरिही मिनल्लाहि तआला वल बअसि बाअदल मौत।

गुस्ल का बयान

नियत गुस्ले एहतेलाम

नवैतो अन अगतसल मिन गुसलिल एहतेलामे मिन रगबति२शैताने

इमतेसा लल्लेअमरिल्लाहे त आला व तहार तलिल वद ने व इस तेवाह तिस्सलाते व.र फ. इलहदसे।

Scanned with CamScanner

नियत गुस्ले हैज

हैज वह गनदा खून जो हर महीने औरतों को आता है उस मुद्दत में वह नापाक रहती हैं इसलिए शरियत ने नमाज भी मुआफ कर दी है। हैज की कम से कम मुद्दत तीन दिन और ज्यादा से ज्यादा मुद्दत दस दिन है। इन दिनों में औरतें नापाक रहती हैं।

नियत–नवैतो अन अगत स ल मिन गुस लिल हैजे इम्तेसालल अमरिल्लाहे तआला व तहार तल लिल वदने ले इस तेवाह तिरसलाते व र फ इलहदसे।

नियत गुस्ले नेफास

नेफास वह गंदा खून जो बच्चा की विलादत के बाद औरतों को आता है इसकी ज्यादह से ज्यादह मुद्दत चालीस दिन रात है और कम से कम की कोई हद नहीं, नमाज मुआफ है।

नियत–नवैतो अन अग त.स.ल. मिन गुस लिन नेफासे इमते सा लल ले अमरिल्लाहे तआला व तहा र. तल लिल व द ने ले इसतेवा ह तिससलाते व.र.फ. इल ह.द. से।

सवाल – गुस्ल करने का तरीका क्या है ?

जवाब – गुस्ल करने का तरीका यह है कि पहले गुस्ल की नीयत करके दोनों हाथ गट्टो तक तीन बार धोए फिर इसतिनजा की जगह धोए उसके बाद बदन पर अगर कहीं नजासते हकीकिया यानी पेशाब या पाखाना वगैरह हो तो इसे दूर करें फिर नमाज जैसा वजू करें मगर पांव न धोए हां अगर चौकी या पत्थर हो ऊंची चीज पर नहाए तो पांव भी

Scanned with CamScanner

धो लें। इसके बाद बदन पर तेल की तरह पानी चुपड़ें फिर तीन बार दाहिने कंधे पर पानी बहाए और फिर तीन बार बाये कंधे पर फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाए। तमाम बदन पर हाथ फेरे और मले फिर नहाने के बाद फौरन कपडा पहन लें।

सवाल – गुस्ल में कितनी बातें फर्ज है ?

जवाब – गुस्ल में तीन बातें फर्ज है – कुल्ली करना, नाक में पानी डालना, तमाम जाहिर बदन पर सर से पांव तक पानी बहाना।

सवाल – गुस्ल में कितनी बातें सुन्नत है ?

जवाब – गुस्ल में यह बातें सुन्नत है – गुस्ल की नीयत करना, दोनों हाथ गट्टों तक तीन बार धोना, इस्तिनजा की जगह धोना, बदन पर जहां कहीं नजासत हो उसे दूर करना, नमाज जैसा वजू करना, बदन पर तेल की तरह पानी चुपडना, दाहिने मोढें फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाना, तमाम बदन पर हाथ फेरना और मलना, नहाने में किबला रुख न होना और कपडा पहन कर नहाना हो तो कोई हर्ज नहीं, ऐसी जगह नहाना कि कोई न देखे, नहाते वक्त किसी किस्म का कलाम न करना, कोई दुआ न पढ़ना, औरतों को बैठकर नहाना, नहाने के बाद फौर कपड़ा पहन लेना।

सवाल – किन सूरतों में गुस्ल करना फर्ज है ?

जवाब – मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ जुदा होकर उज्व से निकलना इहतिलाम, हशफा यानी सरे

Scanned with CamScanner

जकर का औरत के आगे या पीछे दाखिल होना दोनों पर गुस्ल फर्ज करता है। हैज से फारिग होना निफास का खत्म होना।

सवाल – किन वक्तों में गुस्ल करना सुन्नत है ?

जवाब – जुमा, ईद, वकरईद, अर्फा के दिन और इहराम वांधते वक्त नहाना सुन्नत है।

सवाल – किन सूरतों में गुस्ल करना मुसतहव है ?

जवाब – वकूफे अर्फात, वकूफे मुजदलफा, हाजरिये हरम, हाजरीये सरकारे आजम सल्ल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम् तवाफ, दुखूलेमिना तीनों दिन जमारों पर कंकरिया मारने के लिए शवेवरात, शवेकद्र, अर्फा की रात, मजलीसे मीलाद शरीफ और दीगर मजलिसे खैर की हाजिरी के लिये, मुर्दा नहलाने के वाद, मजनून की जुनून जाने के वाद, गशी से इफाका के वाद, नशा जाते रहने के वाद, गुनाह से तोवा करने के लिए, नया कपडा पहिनने के लिए, सफर से वापसी के वाद, इसतिहाजा वंद होने के वाद, नमाजे कुसूफ इसतिसका खौफ तारीकी और सख्त आंधी के लिए वदन पर नजासत लगी हो और यह मालूम न हो कि किस जगह है। इस सव सूरतों में गुस्ल करना मुस्तहव है।

तयम्मुम का बयान

सवाल – तयम्मुम करने का तरीका क्या है ?

जवाब – तयम्मुम करने का तरीका यह है कि अव्वल दिल में नीयत करें फिर दोनों हाथ कि उँगलियां कुशादा करके

Scanned with CamScanner

जमीन पर मारें और ज्यादा गर्द लग जाये तो झाड लें फिर उससे सारे मुंह का मसह करें फिर दोवारा दोनों हाथ जमीन पर मार कर दाहिने हाथ को बाएं दाहिने हाथ से कुहनियों समेत मलें।

सवाल – जुबान से तयम्मुम की नीयत अदा करते वक्त क्या कहें ?

जवाब – यह कहें नीयत की मैंने तयम्मुम की अल्लाह तआला का तकर्रुब हासिल करने के लिए।

सवाल – तयम्मुम का यह तरीका वुजू के लिए है या गुस्ल के लिए ?

जवाब – तयम्मुम का यही तरीका वुजू और गुस्ल दोनों के लिए है।

सवाल – तयम्मुम में कितनी बातें फर्ज है ?

जवाब – तयम्मुम में तीन बातें फर्ज है :– नीयत करना, पुरे मुंह पर हाथ फेरना, दोनों हाथों का कुहनियों समेत मसह करना। अगर अंगूठी पहने हो तो उसके नीचे हाथ फेरना फर्ज है और अगर चूडी या जेवर पहने हो तो उसे हटा कर हर हिस्से पर हाथ फेरना फर्ज है।

सवाल – किन चीजों से तयम्मुम करना जाइज है ?

जवाब – पाक मिट्टी, पत्थर, रेत, मुलतानी

Scanned with CamScanner

मिट्टी, गैरु, कच्ची या पक्की ईट, मिट्टी और ईट पत्थर या चूना की दीवारों से तयम्मुम करना जाइज है।

सवाल – किन चीजों से तयम्मुम करना जाईज नहीं है ?

जवाब – सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, लकडी, अल्युमुनियम, जस्ता, कपडा, राख और हर किस्म के गल्ला से तयम्मुम करना जाइज नहीं। यानी जो चीजें आग में पिघल जाती है या जल कर राख हो जाती है उन चीजों से तयम्मुम करना जाइज नहीं।

सवाल – तयम्मुम करना कब जाइज है ?

जवाब – जब पानी पर कुदरत न हो तो तयम्मुम करना जाइज है।

सवाल – पानी पर कुदरत न होने की क्या सूरत है ?

जवाब – पानी पर कुदरत न होने की यह सूरत है कि ऐसी बिमारी हो कि वुजू या गुस्ल से उसके ज्यादा हो जाने का सही अंदेशा हो ऐसे मुकाम पर मौजूद हो कि वहां चारो तरफ एक मील तक पानी का पता न हो या इतनी सर्दी हो कि पानी के इस्तेमाल से मर जाने या बीमार हो जाने का कवि अंदेशा हो या कुआं

Scanned with CamScanner

मौजूद है मगर डोल व रस्सी नहीं पाता है इनके अलावा पानी पर कुदरत न होने की और भी सूरते हैं वहारे शरीअत वगैरह वडी किताबों से मालूम की जा सकती है।

सवाल – किन चीजों से तयम्मुम टूट जाता है ?

जवाब – जिन चीजों से वुजू टूट जाता है या गुस्ल वाजिव होता है उनसे तयम्मुम भी टूट जाता है। अलावा इनके पानी पर कुदरत हो जाने से तयम्मुम टूट जाता है।

इसतिनजा का बयान

सवाल – इसतिनजा का तरीका क्या है ?

जवाब – पेशाव के वाद इसतिनजा करने का तरीका यह है कि पाक मिट्टी, कंकर या पत्थर के तीन, पांच या सात टुकडों से पाखाना की जगह साफ कर लें फिर पानी से धो डालें।

सवाल – इसतिन्जा का ढेला और पानी किस हाथ से इस्तेमाल करना चाहिए ?

जवाब – वाएं हाथ से।

सवाल – किसी किस्म का खाना, हड्डी, गोवर लीद, कोईला और जानवर का चारा इन सव चीजों से इसतिन्जा करना मना है ?

Scanned with CamScanner

जवाब – कुंए या हौज या चश्मा के कनारे, पानी में अगरचे बहता हुआ हो, घाट पर, फलदार दरख्त के नीचे ऐसे खेत में कि जिसमें खेती मौजूद हो, साया में जहां लोग उठते बैठते हों मस्जिद या ईदगाह के पहलू में, कब्रिस्तान या रास्ते में, जिस जगह जानवर बंधे हों और जहां वजू या गुस्ल किया जाता हो, इन सब जगहों में पाखाना पेशाब करना मना है।

सवाल – पाखाना या पेशाब करते वक्त मुंह किस तरफ होना चाहिए ?

जवाब – पाखाना या पेशाब करते वक्त किबला की तरफ मुंह या पीठ करना मना है हमारे मुल्क में उत्तर या दक्षिण जानिब मुंह करना चाहिए।

किताबुल आमाल

मिसवाक करने की दुआ :

अल्ला हुम्मज अल मिसविकी हाजा मुहीसलले जुनुबी व मरदा तल्ल
का या सय्येदी व वैइज बेही वज ही कमा बैय्यज त वेही असनानी।

वुजू का बयान

नमाज पढने से पहले वुजू करना फर्ज है। वुजू के बगैर नमाज सही नहीं होगी।

Scanned with CamScanner

वुजू की नीयत इस तरह है :

-: नियत :-

अ-त वज्जउ लिरफअिल ह-द-सि अऊजु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम बिस्मिल्लाहिल अजीमे वल हम्दु लिल्लाहि अला दीनिल इस्लाम। अल इसलामो हक्कुन वल कुफरो बातेलून अल इसलामो नूरुवं वल कुफरो जूलमतुन।

वुजू का तरीका :

सबसे पहले नीयत करके बिस्मिल्लाह कहें फिर दोनों हाथों को पहुचों तक तीन बार धोये, तीन बार कुल्ली करें, तीन बार नाक में पानी डालें फिर तीन बार पूरा मुंह धोये, दोनों हाथ कुहनियों तक धोये, चौथाई सर का मसह करें और आखिर में दोनों पांव टखनों तक धोये, कहीं बाल बराबर सूखा न रहे।

वजू करने का तरीका यह है कि पहले तस्मिया पढें फिर मिस्वाक करें। अगर मिस्वाक न हो तो उंगली से दांत मले फिर दोनों हाथों को गट्टों तक तीन बार धोएं, पहले दाहिने हाथ पर पानी डालें फिर बाएं हाथ पर, दोनों हाथों को एक साथ न धोएं फिर बांए हाथ की छोटी उंगली से नाक साफ करें और दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढाएं फिर

Scanned with CamScanner

पूरा चेहरा धोए यानी पेशानी पर बाल उगने की जगह से ढोडी के नीचे तक और एक कान की लो से दूसरे कान की लो तक हर हिस्सा पर तीन बार पानी बहाए, इसके बाद दोनो हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोये, उंगलियों की तरफ से कुहनियों के ऊपर तक पानी डालें फिर एक बार दोनों हाथ से पुरे सर का मसह करें फिर कानों का और गरदन का एक-एक बार मसह करें फिर दोनों पांव टखनों समेत तीन बार धोये।

सवाल - धोने का मतलब क्या है ?

जवाब - धोने का मतलब यह है कि जिस चीज को धोवो उसके हर हिस्सा पर पानी बह जाए।

सवाल - अगर कुछ हिस्सा भीग गया मगर उस पर पानी नहीं बहा तो वजू होगा या नहीं।

जवाब - इस तरह वजू हरगिज नहीं होगा भीगने के साथ हर हिस्सा पर पानी बह जाना जरुरी है।

सवाल - वजू में कितनी चीजें फर्ज है ?

जवाब - वजू में चार चीजें हैं अव्वल मुंह धोना यानि बाल निकलने की जगह से ठोडी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक, दूसरे कुहनियों समेत दोनों हाथ धोना, तीसरे

Scanned with CamScanner

चौथाई सर का मसह करना यानि भीगा हुआ हाथ फेरना, चौथा दोनों पांव टखनों समेत धोना।

सवाल - वजू में सुन्नतें कितनी है ?

जवाब - वजू में सुन्नते सोलह है नीयत करना, तस्मिया पढकर शुरु करना, दोनों हाथों को गट्टों तक तीन बार धोना, मिसवाक करना, दाहिने हाथ से तीन बार कुल्लियां करना, दाहिने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढाना, बाएं हाथ से नाक साफ करना, दाढी का खिलाल करना, हाथ पांव की उंगलियों का खिलाल करना, हर उज्व को तीन-तीन बार धोना, पूरे सर का एक बार मसह करना, तरतीब से वजू करना, दाढी के जो बाल मुंह के दायरे के नीचे हैं उनका मसह करना, आजा को पै दर पै धोना, हर मकरुह बात से बचना।

सवाल - वजू में कितनी बातें मकरुह है ?

जवाब - वजू में इक्कीस बातें मकरुह हैं। औरत के गुस्ल या वजू के बचे हुए पानी से वजू करना, वजू के लिए नजिस जगह बैठना, नजिस जगह वजू का पानी गिराना, मस्जिद के अन्दर वजू करना, वजू के आजा से बरतन में कतरे टपकाना, पानी में रीठ या खकार डालना, किबला की तरफ थूक या खकार डालना या कुल्ली करना, बगैर जरुरत दुनिया की

Scanned with CamScanner

बातें करना, जरुरत से ज्यादा पानी खर्च करना, पानी इस कदर कम खर्च करना कि सुन्नत अदा न हो, मुंह पर पानी मारना, मुंह पर पानी डालते वक्त फूंकना, सिर्फ एक हाथ से मुंह धोना, गले का मसह करना, बाएं हाथ से कुल्ली करना य। नाक में पानी डालना, दाहिने हाथ से नाक साफ करना, अपने लिए कोई लोटा वगैरह खास कर लेना, तीन नए पानी से तीन बार सर का मसह करना, जिस कपडे से इसतिन्जा का पानी खुश्क किया हो उससे आजाए वजू पोछना, धूप के गरम पानी से वजू करना, किसी सुन्नत को छोड देना।

सवाल – किन चीजों से वजू टूट जाता है ?

जवाब – पखाना या पेशाब करना, पाखाना पेशाव के रास्ते से किसी और चीज का निकलना, पाखाना के रास्ते से हवा का निकल जाना, वदन से किसी मुकाम से खून व पीप का निकल कर ऐसी जगह वहना कि जिस का वजू या गुस्ल में धोना फर्ज है, खाना पानी या सफरा की मुंह भर के आना, इस तरह से सो जाना कि जिस्म के जोड ढीले पड जाएं, वेहोश होना जुनून होना, गशी होना, किसी चीज का इतना नशा होना कि चलने में पांव लडखडाएं, रुकू और सजदा वाली नमाज में इतनी जोर से हंसना कि

Scanned with CamScanner

आसपास वाले सुने, दुखती आँख से आंसू वहना, इन तमाम बातों से वजू टूट जाता है ।

नमाज और उसकी शर्तें

नमाज अल्लाह तआला की इवादत और वन्दगी का एक खास तरीका है, जो अल्लाह के हुक्म और प्यारे नबी की सुन्नत के मुताविक अदा की जाती है। नमाज दिन-रात में पांच बार पढना हर वालिग मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज है। नमाज के लिए कुछ शर्त है, जिनको पूरा किए वगैर नमाज नहीं हो सकती। कुछ शर्तों का नमाज शुरु करने से पहले पूरा करना जरुरी है, जैसे वुजू और कुछ शर्तों का नमाज पढते हुए ख्याल रखा जाता है।

शर्तें :-

1. बदन का पाक होना यानि बदन पर किसी किस्म की गन्दगी न हो।
2. कपडों का पाक होना।
3. जगह का पाक होना।
4. सतर का छिपाना। मर्दों का सतर नाफ से घुटने तक है, और औरतों का सतर चेहरा, हाथ और टखने के नीचे हिस्से को छोडकर पूरा बदन है। जिस हिस्से को छिपाना फर्ज है, उसी को सतर कहते हैं।

Scanned with CamScanner

5. नमाज का वक्त होना।

6. किब्ले की तरफ मुंह करना।

7. नीयत करना।

नमाज और वक्त

नमाज अल्लाह तआला की इबादत करने का सबसे अच्छा तरीका है, जो हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमान को सिखाया।

रात-दिन में पांच नमाजें पढ़नी फर्ज हैं।

पहली नमाज फज्र – जो सुबह के वक्त सूरज निकलने के पहले पढी जाती है।

दुसरी नमाज जोहर – जो दोपहर को सूरज ढलने के बाद पढी जाती है।

तीसरी नमाज अस्र – जो सूरज छिपने के दो घंटे पहले पढी जाती है।

चौथी नमाज मगरिब – जो शाम को सूरज छिपने के बाद पढी जाती है।

पांचवी नमाज इशा – जो सूरज छिपने के दो घंटे बाद पढी जाती है।

Scanned with CamScanner

अजान और नमाज

अल्लाहु अकबर0 अल्लाहु अकबर0 अल्लाहु अकबर0 अल्लाहु अकबर-अशहदुअल-ला इला-ह इल्लल्लाह0 अशहदुअल-ला इला-ह इल्लल्लाह0 अशहदु अन-न-मुहम्मदर रसूलुल्लाह0 अशहदु अन-न-मुहम्मदर रसूलुल्लाह0 हैय्या अलस-सलाह0 हैय्या अलस-सलाह0 हैय्या अलल फलाह0 हैय्या अलल फलाह0 अल्लाहु अकबर0 अल्लाहु अकबर0 लाइला-ह इल्लल्लाह0

अस-सलातु खैरुम मिनन नौम (नमाज पढना सोने से वेहतर है) ये बोल सिर्फ सुवह की अजान में हैय्या अलल फलाह के बाद दो बार कहे जाते हैं। जब तुम अजान के बोल सुनो तो तुम भी वही लफ्ज जुवान से अदा करते रहो, जो अजान देने वाला कह रहा है। जब मोअज्जीन कहे हैय्या अलस-सलाह और हैय्या अलल फलाह तो तुम ये लफ्ज न कहो, वल्कि उनके जवाव में कहो-लाहौ-ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

अजान के बाद यह दुआ पढ़े :-

अल्लाहुम्मा रब्बा हा-जिहिद दावतित्ताम्मते वस-सलातिल काइमते आते मुहम्मद-निल-

Scanned with CamScanner

वसी-ल-ते वल फजी-ल-ते वद-दे-रज तर रफी-अ-त वब्असहु मकामम महमूद-निल-लजी व अत्त तहू वर्जुकना शफा-अतहू यौमल कियामते इन-नकला तुख्लिफुल मेआद।

नमाज जमाअत के साथ

दूसरे मुसलमानों के साथ मस्जिद में इमाम के पीछे नमाज पढने का अकेले नमाज पढने के मुकाबले में सत्ताइस गुना ज्यादा सवाव मिलता है, इसलिए जमाअत के साथ नमाज पढने के लिए कोशिश करनी चाहिए। अजान सुनते ही सब काम छोडकर मस्जिद में आ जाना जाहिए ताकि आराम से वुजू करो। तमाम नमाजों में सिर्फ फर्ज इमाम के साथ पढे जाते है, वाकी सुन्नतें और नफ्ल वगैरह अलग अदा किए जाते हैं।

इमाम के पीछे सिर्फ सना पढ़कर खामोश खडे हो जाओ। इमाम सुरह फातिहा और कुरआन शरीफ की कोई सूरह पढ़ेगा और तुम खामोशी के साथ सुनोगे।

जोहर के चार फर्ज पढ़ते वक्त इमाम आहिस्ता-आहिस्ता सूरह फातिहा और कोई सूरह पढ़ेगा और तुम खामोश रहोगे, बाकी तमाम त्सबीहें इमाम के पीछे तुम भी पढोगे और इमाम के पीछे तुम भी

Scanned with CamScanner

अततहीयात दरूद शरीफ और कोई दुआ पढोगे और इमाम के साथ ही सलाम फेरोगे।

इकामत – इकामत के बोल अजान ही की तरह है, फर्क इतना है कि इकामत में हय–य अलल फलाह के बाद कद का–म–तिस्सलाह बढा दिया जाता है और इसे दो बार कहा जाता है। अकेले पढी जाने वाली सुन्नत और नफ्ल नमाजों में इकामत के बोल अदा नहीं किये जाते।

नमाज पढ़ने का सबसे आसान तरीका

पाक–साफ होकर, वुजू करके, पाक कपडे पहनकर, पाक जगह पर किब्ले की तरफ मुंह करके नमाज की नियत बांधे।

नीयत इस तरह करे :– इन्नी वज्जह तो वज्हि–य लिल्लजी फ–त–रस्समा–वाति वल अर–द–हनीफौ–व माअना मिनल मुशरेकीन, नीयत की मैंने दो रकअत नमाज फजिर की फर्ज वास्ते अल्लाह तआला के मुंह मेरा कअबा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर। (इसे तकबीर कहते हैं)

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ
اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

Scanned with CamScanner

(सना) सुब्हा-न-क-अल्ला हुम्मा व बिहमदे-क व तबा-र-करमु क व तआला जददु-क व ला इलाह गैरु-क0

आऊजु बिल्लाहि मिनश शैतानिर्रजीम । (मैं अल्लाह की पनाह लेता हुँ शैतान मर्दूद से)। इसे तअव्वुज कहते हैं। फिर - बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम । (अल्लाह के नाम से शुरु जो बडा मेहरबान और रहम वाला)। इसे तस्मिया कहते हैं पढे। अब सूरये फातिहा पढें :-

सुरह फातिहा

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन0 अर्रहमा निर्रहीम0 मालिकि यौमिद्दीन0 ईय्या-क नअबुदो व ईय्या क नस्तईन0 ईहदिनस्सिरातलमुस्तकी-मा-सिरातल्ल-जी-न अन-अम-त अलैहिम गैरिल मग्दुबि अलैहिम व लद्दाल्लीन (आमीन)।

इसके बाद आमीन आहिस्ते से कहें और यह सुरह पढें।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलम तर कैफ फअला रब्बुक बि अस्हाबिल फील0 अलम्यज अल कैदहुम् फी तदलीलिंव0 व अरसल अलैहिम तैरन अबा बील0 तर्मीहिम बिहिजा

Scanned with CamScanner

रतिम मिन सिज्जील0 फ अलहुम कअस्फिम् मअकुल। फिर अल्लाहु अकबर कहकर रुकू में जाएं और पढें :-

सुबहानरब्बीयल अजीम (तीन बार)

समिअल्लाहहु लिमन हमिदह। इसे कौमा कहते हैं। फिर कहे - रब्बना लकल हम्द फिर अल्लाहो अकबर कहकर सज्दे में जाएं और पढें सुब-हा-न-रब्बीयल आला (तीन बार), फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए बैठ जाएं फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए दूसरे सजदे में जाएं और तीन बार सुब-हा-न-रब्बीयल आला पढें फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए खडे हो जाएं, यह आपकी पहली रिकाअत पुरी हो गई। और फिर दूसरी रिकाअत के लिए सुरए फातिहा पढें।सुरह फातिहा

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन0 अर्रहमा निर्रहीम0 मालिकि यौमिद्दीन0 ईय्या-क नअबुदो व ईय्या क नस्तईन0 ईहदिनस्सिरातलमुस्तकी-मा-सिरातल्ल-जी-न अन-अम-त अलैहिम गैरिल मग्दुबि अलैहिम व लद्दाल्लीन (आमीन)।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ले ईलाफि कुरैशिन0 ईलाफिहिम् रेहलतश0 शिताए वस्सैफ0 फलयअबुदु रब व हाजलबैति-

Scanned with CamScanner

ल्लजी0 अत अ महुम मिन जूइव व आ-म-नहुम मिन् खौफ। फिर रुकुअ में जाएं और तीन वार पढें सुवहान रव्वे यल अजीम अल्लाहु अकवर, (रव्वना लकलहम्द) फिर अल्लाहु अकवर कहते हुए सजदे में जाएं और तीन वार पढ़ें सुवहानरब्बी यलआला, फिर अल्लाहु अकवर कहते हुए बैठ जाएं फिर अल्लाहु अकवर कहते हुए दूसरे सजदे के लिए जाएं और तीन वार पढें सुव्हान रव्बी यलआला फिर अल्लाहु अकवर कहते हुए बैठ कर पढें -

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ
اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَ
عَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ط اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا
اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत-तहीयातु लिल्लाहि वस्सल-वातु वत-तैय्येवातु अस्सलामु अलै-क अय्युहन-नबीयु व रह मतुल्लाहि व बर कातुहू अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन। अश्हदु अंल्ला इला ह इल्लल्लाहु व अश्हतु अन्-न मुहम्मदन् अब्दहु व रसूलुहू। फिर पढें :-

Scanned with CamScanner

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَ
عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط

दरुद शरीफ

अल्ला हुम–म सल्लि अला मुहम्मदिवं–व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्ले–त अला सैय्यदेना इब्राही–म व अला आलि सैय्यदेना इब्राही–म–इन–न–क हमीदुम मजीद0 अल्लाहुम–म बारिक अला सैय्यदेना मुहम्मदिवं–व अला आलि सैय्यदेना मुहम्मदिन कमा बारक–तअला सैय्यदेना इब्राही–म व अला आलि सैय्यदेना इब्राही–म इन–न क हमीदुम–मजीद।

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ
فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

Scanned with CamScanner

दरुद शरीफ के बाद की दुआ

अल्लाहुम-म इन्नी जलम्तु नफसी जुल्मन कसीरंव-व ला यग्फिरुज्जून-ब इल्ला अन्त फगफिरली मगफिरतंम मिन इन्देक वरहमनी इन्नक अन्तलगफूरुर्रहीम।

तर्जुमा - ऐ अल्लाह मैं अपने नफ्स पर बहुत-बहुत जुल्म किया है और तेरे सिवा कोई गुनाहों को बख्श नहीं सकता। बस तु अपनी तरफ से खास बख्शिश से मुझको बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा दे। बेशक तू ही बख्शने वाला नेहायत रहमत वाला है। इसके बाद सलाम फेर दें - अस्सलामु अलैकुम व रह मतुल्लाहि (सलामती हो तुम पर और अल्लाह की रहमत) यह आपकी दो रिकाअत नमाज पुरी हो गई।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ
السَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ
وَتَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ط

Scanned with CamScanner

नमाज के बाद दुआ

अल्ला हुम–म अन्तस–सलामु व मिन्कस–सलाम इलैक यरजे उस सलामु हैय्यिना रब्बना बिस्सलामि व अद्खिलना दारस्सलाम तबारक–त रब्बना व तआलै–त या जल जलालि वल इक्राम।

वित्र की नमाज

वित्र की नमाज वाजिब है और उस की तीन रक्अतें हैं। इस नमाज का वक्त इशा के फर्जों के बाद से पौ फटने तक है। वित्र की तीसरी रक्अत में सुरह फातिहा और कोई सूरह पढने के बाद अल्लाहु अकबर कह कर हाथ कान की लौ तक उठाएं और बांध ले, फिर यह दुआ पढे, इसे दुआ–ए–कुनूत कहते हैं :–

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَ
نَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا
نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ؕ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْ
رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ؕ

Scanned with CamScanner

दुआ-ए-कुन्नूत

अल्ला हुम-म इन्ना-नस्तईनु-क व नस्तग फिरुक व नुमिनुबिक व न-त-वक-कलु अलैक व नुस्नी अलै-कल खैर व नश कुरु-कवला नकफुरु-क व नख-लअु व नतरुकु मय्यफजुरु-क अल्ला हुम-म ईया-क नअबुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदू व इलै-क नसआ व नहफिदु व नर्जु रह-म-त-क व नख्शा अजा-ब-क इन्ना अजाबक बिल कुफ्फारि मुल हिक।

अगर ये दुआ याद न हो तो यह दुआ पढ़ें :-

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फिद् दुनिया ह स न तवं व फिल आखि र ति ह स न
तवं व क़िना अज़ाबन्नार०

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

Scanned with CamScanner

सुरह फातिहा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन० अर्रहमा निर्रहीम० मालिकि यौमिद्दीन० ईय्या-क नआबुदो व ईय्याक नस्तईन० ईहदेनस सिरातलमुस्तकी-मा-सिरातल्ल-जी-न अन-अम-त अलैहिम गैरिल मग्दुवि अलैहिम व लद्दाल्लीन (आमीन)।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝ اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۝ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝ تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलम तर कैफ फअला रब्बुक बि अस्हाबिल्फील० अलम्यज अल कैदहुम् फी तदलीलिंव० व अरसल अलैहिम तैरन अबाबील० तर्मीहिम बिहिजा रतिम मिन सिज्जील० फज अलहुम कअस्फिम् मअकुल।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۝ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝

Scanned with CamScanner

विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लि ईलाफि कुरैशि० ईलाफिहिम् रेहलतश० शिताए वस्सैक० फलय अबुदु रब बा हाजलबैति-ल्लजी० अत अ महुम मिन जूइव व अ-म-नहुम् मिन् खौफ।

أَرَءَيْتَ الَّذِى يُكَذِّبُ بِالدِّينِ ۝ فَذَٰلِكَ الَّذِى يَدُعُّ الْيَتِيمَ ۝
وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ
هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝ وَيَمْنَعُونَ
الْمَاعُونَ ۝

विस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अर ऐ तल्लजी युकज्जिबु बिद्दीन० फजालिकल्लजी यदुअ अुल यतिम० व ला यहुदह् अला तआमिल मिस्कीन फवैलुल लिलमुसल्लीनल ल्लजी-न हुम अन सलातिहिम साहून० अल्लजी न हुम युराऊन० वयम नऊनल्-माअून०

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝ إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝

Scanned with CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्ना अअ्तैनाकल कौसर० फ-सल्लि लिरब्बिक वन्हर० इन्न शानि अ-क होवल अबतर०

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۠

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुलया अय्युहल-काफिरुन० ला अअबुदु मा ताअ-बुदुन० व ला अन्तुम आबिदून मा अअबुदु० व ला अ-ना आबिदुम मा अबत्तुम० वला अन्तुम आबिदुन मा आबुद लकुम दीनुकुम वलियदीन।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۠

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इजा जाआ नररूल्लाहि वल्फत्हु० व रएतन्नास यदखुलून फी दीनील्लाहि अफ्वाजा फसब्बिह विहम्दि रब्बिक व स्तगफिर हू इन्नहू का न तव्वाबा।

Scanned with CamScanner

تَبَّتْ يَدَآ اَبِىْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝ سَيَصْلٰى
نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝ وَّامْرَاَتُهٗ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝ فِىْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तब्बत यदा अबी लहबिंव व तब ब मा आगना अन्हुमा लहूवमा कसब० सय्यस्सला नारन जात लहबिंव वम र अतुहु हम्मालतलहतब फी जीदिहा हब्लुम मिम मसद।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ ۝ وَلَمْ
يُوْلَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल हुवल्लाहु अ हद० अल्लाहुस्समद० लम यलिद व लम युलद व लम यकुल्लहु कुफुवन अहद।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ
۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल अऊजो बिरब्बिल फ-लकि, मिन शरिं मा खलक व मिन शरिं गासिकिन इजा व कब० व मिन शरिंन नफासाति फिल-ऊकद० व मिन शरिं हासिदिन इजा हसद।

Scanned with CamScanner

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ
الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۙ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल अऊजु बिरब्बिन्नासि० मलिकिन्नासि० इलाहिन्नासि० मिन शर्रिल व स्वासिल्खन्नासि अल लजी यूवसवेसू फी सुदूरिन्नास० मिनल जिन्नति वन्नासि०।

नमाज की तर्कीब

फर्ज कीजिए कि आपको फजिर की नमाज पढना है। इस नमाज में पहले दो रकअत सुन्नत पढो फिर फर्ज पढो। दो सुन्नत की नीयत इस तरह बांधो। नीयत की मैंने दो रकअत नमाज सुन्नत फजिर की वास्ते अल्लाह तआला के मुंह मेरा तरफ कावा शरीफ के अल्लाहु अकबर कहकर अपने दोनों हाथ कानों तक उठाओ फिर दोनों हाथ नाफ (टुडी) के नीचे इस तरह बांध लो कि दायां हाथ ऊपर और बायां हाथ नीचे रहे। नमाज में इधर उधर न देखो, अदब से खडे रहो। अल्लाह तआला की तरफ ध्यान रख्खो।

Scanned with CamScanner

सुब्हा-न-कअल्ला हुम-म से गैरु-क तक फिर आऊजो बिल्लाहिमिनश-शैतानिर्रजीम और बिस्मिल्लाह पढकर अल्हम्दु शरीफ पढो। अल्हम्दु लिल्लाह से लेकर दाल्लीन तक इसके बाद आहिस्ता से आमीन कहो। फिर सूरह इख्लास या कुरआन शरीफ की कोई सूरह जो तुम्हे याद हो पढो। फिर अल्लाहु अकवर कहकर रुकूअ में जाओ और अपने दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ लो और सुब्हा-न रब्बीयल अजीम तीन बार या पांच बार कहो फिर समि अल्लाहु लिमन हमिदह कहते हुए खडे हो जाओ और रब बना लकल हम्द पढो। फिर अल्लाहो अकवर कहते हुए सज्दे में जाओ। पहले दोनों घुटने जमीन पर रखो फिर दोनों हाथ, दोनों हाथों के बीच में पेशानी रखो और सुब्हा-न रब्बीयल आला तीन बार या पांच बार कहो, फिर अल्लाहु अकवर कहकर फिर सज्दा करो और सुब्हा-न रब्बीयल आला तीन बार या पांच बार कहो फिर तक्बीर कहकर खडे हो जाओ। उठते वक्त जमीन पर हाथ न रखो।

यह आपकी एक रकअत पूरी हो गई। अब दूसरी शुरु होती है। हाथ बांधे हुए पहले की तरह खडे हो जाओ। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कह कर सूरह

Scanned with CamScanner

फातिहा पढो फिर कुरआन शरीफ की कोई सूरह पढो, फिर तकवीर कह कर रुकूए में जाओ और पहले की तरह रुकूअ की तस्बीह पढो फिर तकवीर कहकर खडे हो जाओ और जिस तरह पहली रकअत पढी थी दूसरी रकअत भी उसी तरह पढो और दूसरा सज्दा करके बैठ जाओ। (तशह-हुद) अत-तहीयातु से लेकर व रसूलुहू तक पढो। फिर दरुद शरीफ अल्लाहुम्मा से लेकर मजीद तक पढो। इसके बाद दरुद शरीफ के बाद वाली दुआ पढो, फिर दाहिनी और बायी तरफ मुंह फेर कर कहो अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह। लीजिए ये दोनों रकअते पूरी हो गयी अब दो फर्ज की नियत करो और सुन्नत के बजाए फर्ज कहो और पहले की तरह दोनों फर्ज अदा करो।

जब नमाज खत्म हो जाए तो 33 बार सुब्हानल्लाह, 33 बार अल्हम्दु लिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अकबर पढकर दुआ मांगो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ۚ لَهٗ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ
اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ
كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

Scanned with CamScanner

आयतुल कुर्सी

फर्ज नमाज के बाद आयतुल कुर्सी पढने का बडा सवाब है, इसकी बडी फजीलत आयी है। आयतुल कुर्सी यह है :-

अल्लाहु ला इला-ह इल्लाहू-व अल-हय्यूल कय्यूम ला तअ खुजुहू सि-न-तुंव व ला नौम लहू मा फिस्समावाति व माफिल अदि मन जल्लजी यशफअु अिन-द-हू इल्ला बिइज्निही यअ् लमु मा बै-न ऐदीहिम व मा खलफ हुम व ला युहीतू-न बिशैइम मिन इल्मेही इल्ला बिमाशा-अ व सि अ कुर्सीयुहुस्समावाति व ल अरद व ला यऊदहु हिफ्जुहुमा व हुवल अलीयुल अजीम।

तर्जुमा - अल्लाह (यह है कि) उस के सिवा कोई मावूद नहीं, जिंदा है (दुनिया के कारखाने को) कायम रखने वाला है, न उस को ऊंध आती है, न नींद। उसी का है, जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, कौन है जोउस के हुक्म के बगैर उस की जनाब में (किसी की) सिफारिश करे। जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उसके पीछे है और लोग उस की मालूमात में से किसी चीज पर एहाता नहीं कर सकते, मगर जितनी वह चाहे उसकी कुर्सी आसमानों और जमीन पर

Scanned with CamScanner

हावी है और उन की हिफाजत उसको थकाती नहीं और वह आलीशान, बडाई वाला है।

फजर की नमाज

इस नमाज में चार रिकाअत है, दो रिकाअत सुन्नते मुअक्केदा और दो रिकाअत फर्ज है। इस नमाज को सुरज निकलने से 20 मिनट पहले पढी जाती है।

जुहर की नमाज

इस नमाज की चार सुन्नते, चार फर्ज, दो सुन्नतें और दो नफ्ल है। पहले चार सुन्नतों की नियत बांधे। दूसरी रकअत के बाद जब तुम अत-तहीयात पढ चुके तो तक्बीर कहकर खडे हो जाओ और पहले की तरह तीसरी और चौथी रकअत अदा होने के बाद आखिर में अत-तहीयात, दरुद और दुआ पढ़कर सलाम फेर दो।

अब चार फर्ज की नियत बांधे जैसे सुन्नते पढ़ी गई है, उसी तरह फर्ज पढो, लेकिन तीसरी और चौथी रकअत में सिर्फ सूरह फातिहा पढो, इसके साथ कोई और सूरह न मिलाओ, फिर दो सुन्नते पढो। आखिर के दो नफ्ल, चाहे खडे होकर पढो चाहे बैठकर दोनों तरह जाइज है।

Scanned with CamScanner

अस्र की नमाज

इस नमाज में सिर्फ 4 फर्ज है। अगर फर्जों से पहले चार सुन्नतें भी पढ ली तो ज्यादा सवाव मिलता है। अगर चार सुन्नतें न पढो तो नमाज अदा हो जाएगी।

मगरिब की नमाज

इस नमाज में तीन फर्ज और दो सुन्नत और दो नफ्ल है। तीन फर्ज इस तरह पढे जाएंगे कि दो फर्जों के बाद अत्तहियात पढकर तक्बीर कहकर खडे हो जाओ, फिर सिर्फ सूरह फातिहा पढकर रुकूअ और सजदे में जाओ, अत्तहियात, दरुद शरीफ और दुआ पढकर सलाम फेर दो।

इशा की नमाज

इस नमाज में चार सुन्नतें, चार फर्ज, दो सुन्नतें, दो नफिल, तीन वित्र और फिर दो नफ्ल है। वित्र पढने का यह तरीका है कि पहले तीन रकअत वित्र की नीयत वांधो। तीसरी रकअत में सूरह फातिहा और कुरआन शरीफ की कोई सूरह पढने के बाद दुआए-कुनूत अल्ला हुम-म इन्ना, से लेकर मुलहिक तक पढो फिर तक्बीर कहकर रुकूअ और सजदे में जाओ, फिर पहले की तरह तीसरी रकअत पूरी कर लो फिर दो सुन्नतें और दो नफ्ल पढकर नमाज खत्म कर दो।

Scanned with CamScanner

जुमा की नमाज

जुमे की नमाज का वक्त वही है जो नमाजे जुहर का है। जुमे की नमाज पढने से जुहर की नमाज भी अदा हो जाती है। जुहर और जुमे की नमाज में फर्क यह है कि जुमे में बजाए चार के दो फर्ज पढे जाते हैं और सुबह की नमाज की तरह इमाम सूरह फातिहा और कुरआन शरीफ की कोई सूरह जोर-जोर से पढता है और सब नमाजी सुनते हैं। जुमे की नमाज में पहले चार रिकअत सुन्नत मुअक्केदा फिर दो रिकअत फर्ज फिर चार रिकअत सुन्नते मुअक्केदा फिर दो रिकअत सुन्नते गैर मुअक्केदा फिर दो रिकअत नफिल कुल चौदह रिकअत है।

मुसाफिर की नमाज

अपने वतन या शहर से 48 मील दूर होने के बाद नमाज में रियायत हो जाती है। हर नमाज के सिर्फ दो फर्ज पढे जाते हैं, बाकी नमाज माफ हो जाती है, लेकिन शहर में कम से कम पन्द्रह दिन रहने का इरादा हो तो पूरी नमाज पढनी चाहिये। मुसाफिर की नमाज को नमाज कस्र भी कहते हैं।

Scanned with CamScanner

बीमार की नमाज

जो शख्स खड़ा होकर नमाज न पढ सके, वह बैठकर भी नमाज पढ सकता है और जो बैठकर भी नमाज न पढ सके, वह लेटकर और इशारे से नमाज पढ सकता है। उसको चाहिए कि किब्ले की तरफ पांव फैला दे ताकि किब्ले की मुनासबत कायम रहे, रुकूअ और सज्दे इशारे से करे।

दुआ में क्या मांगना चाहिए ?

सबसे पहले अपने मां-बाप के लिए दुआ मांगो, अगर वह इन्तेकाल हो गए हैं तो उनकी मगफिरत की दुआ मांगो। फिर तमाम मुसलमानों के लिए, फिर अपने लिए। अपने लिए यह दुआ बहुत अच्छी है।

रब्बना आतिना फिद-दुनिया ह-स-न-तंव-व फिल आखिरति ह-स-न-तंव-व किना अजाबन्नार।

इस्लामि वत-तौफिकी लिमा तुहिब्बु व तर्दा।

नमाजे तरावीह

रमजानुल मुबारक के महिने में इशा और सब रकअते पढने के बाद दो-दो रकअते करके बीस रकअत तरावीह पढनी सुन्नत है। यह तरावीह जमाअत के साथ पढनी चाहिये। इन तरावीहों में

Scanned with CamScanner

इमाम बीस या पच्चीस दिनों में पूरा कुरआन शरीफ सुना देता है। हर चार रकअत पढने के बाद चन्द मिनट आराम किया जाता है, उस आराम के वक्त यह दुआ पढनी चाहिये।सुब्हा न जिल मुल्के वल म-ला-कूते सुब्हा-न जिल इज्जते वल अज-मते वल हैबते वल कुदरते वल किब्रियाई वल ज-ब-रुति सुब्हानल मलिकिल हैयिल लजी ला यनामु वला यमूतु सुब्बू हुन कुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुन मलाए-कति वर्रुह। अल्लाहुम-म अजिरना मिनन्नारि या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु।

ईदैन की नमाज

मुसलमानों के लिए साल भर में
दो दिन खुशी के हैं :-

1. ईदुल फित्र

2. ईदे अदहा

इन दोनों दिनों में ये काम सुन्नत या मुस्तहब है।

गुस्ल और मिस्वाक (दतून) करना, अच्छा कपडा पहनना, खुशबू लगाना, ईदुल फित्र के दिन नमाज से पहले कोई मीठी चीज खाना, सद्का-ए-फित्र अदा करके जाना, ईदे अदहा में नमाज के बाद कुर्बानी में से खाना, ईदगाह में ईद की नमाज पढना,

Scanned with CamScanner

पैदल जाना, एक रास्ते से जाना, दूसरे रास्ते से आना, रास्ते में तक्वीर पढते हुए जाना, ईदुल फित्र में तकवीर धीरे-धीरे कहना और ईदे अदहा में तकवीर ऊंची आवाज में कहना।

तकबीर यह है :-

अल्लाहु अकवर अल्लाहु अकवर लाइला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकवर अल्लाहु अकवर व लिल्लाहिल हम्दु० (अल्लाह वहुत वडा है, अल्लाह वहुत वडा है, अल्लाह के अलावा कोई दूसरा इवादत के लायक नहीं है और अल्लाह बहुत वडा है, अल्लाह वहुत वडा है और अल्लाह के लिए ही सारी तारीफे हैं।) ईदुल फित्र और ईदुल अदहा दोनों ईदों की नमाज इस तरह पढो।

नीयत - नीयत करता हूं मैं दो रकअत नमाज ईदुल फित्र मय छः तकवीरों के वास्ते अल्लाह तआला के, पीछे इमाम के मुंह मेरा तरफ काबा शरीफ के, अल्लाहु अकवर। तकवीर कहने के वाद दोनों हाथ वांध लो। पहले सना (सुब-हा-न कल्ला हुम-म) आखिर तक पढो फिर अल्लाहु अकवर कहकर दोनों हाथ कानों तक उठाकर दोनो हाथों को छोड दो। इसी तरह तकवीर पढकर तीन वार

Scanned with CamScanner

ऐसा करो। चौथी तकबीर के बाद दोनों हाथ बांध लो, फिर इमाम के पीछे खामोश खडे रहो, जब वह रुकूअ करे तुम भी रुकूअ करो, जब वह सजदे में जाए तुम भी सजदे में जाओ।

दूसरी रकअत में जब इमाम सूरह फातिहा और कुरआन शरीफ की कोई सूरह पढकर अल्लाहू अकबर कहकर दोनों हाथ कानों तक उठाए तुम भी उठाओ और तीन बार ऐसा करो, चौथी तकबीर कहने के बाद जब इमाम रुकूअ और सजदे में जाए तुम भी जाओ और पहले की तरह नमाज को पूरा करो। नमाज के बाद जब इमाम खुत्बा पढे तो चाहे वह समझ में आये या न आये, इमाम की आवाज तुम तक पहुंचे या न पहुंचे खामोशी के साथ अपनी जगह बैठे रहो। कोई काम या कोई बात न करो। जब इमाम खुत्बा खत्म करके दुआ मांगे तो तुम भी मांगो।

जनाजे की नमाज

इस नमाज में रुकूअ और सजदा नहीं होता। यह नमाज खडे होकर इमाम के पीछे पढी जाती है। इसकी नीयत यह है :-

Scanned with CamScanner

नमाज पढता हूं मअ चार तक्वीरों के वास्ते अल्लाह तआला के, दुआ वास्ते इस मय्यत के (पीछे इमाम के) मुंह मेरा तरफ कावे शरीफ के। अल्लाहु अकबर कहकर दोनों हाथ कानों तक उठाकर बांध लो, फिर हाथ न उठाओ और पहली तक्बीर के बाद सना पढो।

सुब्हा-न कअल्लाहुम-म व बेहम्देका व तबा-र करमुक-व तआला जद्दु-क व जल्लू सनाउ-क व ला इला-हा गैरु का।

दूसरी तक्वीर के बाद दरुद शरीफ पढो।

अल्लाहुम-म सल्लि अला मुहम्मदिनव व अला आलि मुहम्म-दिन कमा सल्लै-त व बारक-त व तबारकत व तर-हम-त अला इब्राहीम व अला आलि इब्राही म इन-न-क हमीदुम मजीद।

तीसरी बार अल्लाहु अकबर कहकर बालिग हो तो यह जनाजे की दुआ पढो :-

अल्ला-हुम्मगफिर ली हैय्येना व मैय्यितिना व शाहेदिना व गाई-बिना व सगिरेना व कबीरेना व ज-करिना व उनसाना अल्लाहुम-म मन अहयै-तह् मिन्ना फअहयेही अलल इस्लामे वमन तवफ्फैय तह् मिन्ना फत वफ्फह् अलल ईमान।

Scanned with CamScanner

इस दुआ को पढ़कर चौथी तक्बीर के साथ दाएं और बाएं सलाम फेर दो, अगर मय्यत नाबालिग लडके की हो तो यह दुआ पढो :-

अल्लाहुम-मजअल-हु लना फ-र-तंव वज-अल-हु लना अजरव जुख-रव वजअल-हु लना शाफिअंव-व मुशफ्फआ।

अगर मय्यत नाबालिग लड़की की हो तो यह दुआ पढ़ो :-

अल्ला-हुम-मज्-अलहा लना-फर-तंव वज-अल हालना अजरव-व जुख्रंव वजअलहा लना शाफि-अतंव व मुशपफअः।

सज्दा सहूव

किसी वाजिब के छूट जाने या दो बार हो जाने से किसी फर्ज के आगे-पीछे हो जाने से नमाज के आखिर में दो सजदे करने पड़ते हैं, सज्दा सहूव इस तरह करें कि आखिरी कादा में तशह हुद पढ़ने के बाद एक तरफ सलाम फेरकर दो सज्दे करें। इसके बाद अत्तहीयात, दरुद शरीफ और दुआ पढ़कर दोनों तरफ सलाम फेरें।

Scanned with CamScanner

फातिहा का मुकम्मल तरीका

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

(कुल या अय्युहल काफिरून लाआबुदू मा तअबुदून वला अनतुम आबिदु-माआबुदुन वला अना आबिदुम माअबत-तुम वला अनतुम आबिदू-न माआबुद लकुम दीनुकुम वलि य दीन) एक बार पढें।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

(कुल हुवल्लाहु अहद अल्ला हुस्समद लम यलिद वलम यूलद वलम यकुल्लहु कुफुवन अहद) इस सूरह को तीन बार पढें।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

(कुल अऊजो बिरब्बिल फलकि मिन शर्रे मा खलक व मिन शर्रे गासिकिन इजा वकब व मिन शर्रिन नफ्फा साते फिल ओ-क-दि व मिन शर्रे हासिदिन इजा हसद) एक बार पढें।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

(कुल अऊजो बिरब्बिन्नासि मलेकिन्नासि इलाहिन्नासि मिनशर्रिल वस्वासिल खन्ना सिल्लजी युवस विसु फीसुदू रिन्नासे मिनल जिन्नति वन्नास) एक बार पढें।

Scanned with CamScanner

अल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आल-मीन अर्रहमानिर्रहीम मालिकि यव मिद-दीन इय्याक नअबुदु व इय्याक नस्तईन इहदिनस सिरातल मुस्तकीम सिरातल लजी-न अन अम-त अलयहिम गयरिल मगदूबि अलयहिम वलद दाल्लीन (आमीन) एक बार पढ़ें।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

(अलिफ लाम्-मीम् जालिकल्किताबु लारय ब-फीहि हुदल्लिल्मुत्तकीन ल्लजी-न युअमिन्-न बिलगयबि व युकीमूनस्सला-त व मिम्मा रजकना हुम युनफिकून वल्लजीन युअमिनू न बिमा उन्जि-ल इलय-क वमा उनजिल मिन कबलिक व बिल आखिरति हुम यूकिनू-न उलाए-क अला हुदम मिर रब्बिहिम व उलाए-क हुमुल मुफलिहू-न व इला हुकुम इलाहुं वाहिदूनला इला-ह इल्ला हुवररह-मानुर-रहीम। इन्ना रहमतल्लाहे करीबुम मिनल मोहसेनीन वमा अरसलनाका इल्ला रहमतललिल आलमीन मा-का-ना मोहम्मदुन अबाअहदिम मिर्रे जालेकुम वला किर रसूलल्लाहे व खातमन्नबीयीन व कानल्लाहो बेकुल्ले शैइन अलीमा। इन्नल्लाहा व मलाएकतहू यो सल्लूना अलन्नबीय या अय्योहललजीना आमनूसल्लु अलैहे वसल्लेमु

Scanned with CamScanner

तस्लीमा । अल्लहुमा सल्लेअला सैय्यदिना मुहम्मदिवं व अला आलि सैय्यदिना मुहम्मदिन व बारिक वसल्लिम । सुब्हान रब्बेका रब्बिलइज्जते अम्मायसेफूना व सलामुन अलल मुरसलीन वलहम्दोलिल्लाहे रब्बिल आलमीन।) एक बार पढें। इसके बाद हाथ उठाकर इसाले सवाब करें।

इसाले सवाब का तरीका

किसी औलिया की फातेहा हो तो खड़ा हो जाएं और दोनों हाथ उठाकर अर्ज करें। या अल्लाह जो मैंने कुर्आन शरीफ पढा और जो पहले दरुद शरीफ कलमा कलामपाक पढा गया। जो कुछ शिरनी पानी वगैरह हाजिर है। घर वालों ने जो एहतेमाम किया इसको अपनी बारगाह में कुबूल फरमा ले। फातेहा पढने में एहतेमाम करने मे, जाने अनजाने में, जो गलती हुई हो उसे माफ फरमा दे। आगे इसका सवाब प्यारे मुस्तफा गुम्बदे खिजरा के ताजदार हजरत मोहम्मद मुस्तफा सलल्लाहो अलैहे वसल्लम की बारगाह में नज्र हो। आपकी आल औलाद तमाम अजवाजे मोहतरम की अरवाह को पहुंचे। जंगे बद्र, जंगे ओहद, शहीदाने करबला की अरवाह को इसका सवाब पहुंचे। तमाम अंबिया मुरसलीन अलैहिस्सलाम, तमाम सहाब-ए-कराम ताबईन

Scanned with CamScanner

तबे तावईन की अरवाह को सवाब अता फरमा, गौसुल आजम पीराने पीर शेख अब्दुल कादिरजिलानी मोईनुद्दीन चिश्ती ख्वाजा गरीब नमाज रदिअ-ल्लाहो तआला अनहू को पहुंचे और सिलसिला, आलिया कादरिया, रिजविया, अशरफिया, चिश्तिया, वारसिया, अजीजीया, सोहरवादिया, तेगीया के जितने मशाएख दुनिया से जा चुके हैं तमाम की रुह पाक को इसका सवाब पहुंचे, तमाम मुस्लेमीन वल मुस्लेमात की रुहे पाक को पहुंच कर खुसुसी तौर से फलां-फलां (जिसके नाम फातेहा देना हो उसका नाम ले) को पहुंचे। आम लोगों में से हो तो उनके लिए मगफेरत की दुआ करें अल्लाह उन्हें जन्नतुल फिरदौस में जगह अता फरमाए, तमाम गुनाहों को माफ फरमा दे, उनकी औलाद को नेक काम करने की तौफीक अता फरमा (आमीन)। और अगर औलिया ए कराम के नाम की फातेहा हो तो उनके वसीले से दुआ मांगे। या अल्लाह प्यारे बन्दे के सदके में हमारे तमाम गुनाहों को माफ फरमा दे। हमें दीन के रास्ते पर चलने की तौफीक अता फरमा, हमारे कारोबार में बर्कत दे, हर बला मुसीबत से राहत में बदल जाए, हमारे ईमान की हिफाजत फरमा, जिन्दा रहे तो इश्के मुस्तफा में

Scanned with CamScanner

जिन्दगी गुजरे और कल कयामत में भी उन्हीं के साथ हों और साथ ही अपने घर वगैरा और तमाम मुसलमानों के लिए दुआए खैर करें। दिल से दुआ करें कि दुआ में ताब हो, इंकेसारी अजजा के तौर पर आंसुओं के कतरे निकल पड़ें क्योंकि जब दिल से जायज दुआ मांगी जाएगी तो बारगाहे खुदावन्दी में जरूर कुबूल हो जाएगी।

इसके बाद इन्नल्लाह व मलाएकतुहु योसल्लुन अलन्नबिया अय्योहल्लजीना आमुन सल्लु अलैहे वसल्लेम् तसलीमा पढे। सभी मौजूद लोग और खुद भी अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यदना मोहम्मदिय साहवेही व बारिक व सल्लिम पढ़े और दोनों हाथ चेहरे पर फेर लें। बेरहमतेक या अर्रहमर राहेमीन।

फातेहा कब-कब दिलाएं

यहां कुछ खास-खास तारीखों का जिक्र किया जा रहा है जिसमें उनके नाम की फातेहा दिलाना चाहिए :-

7 मोहर्रम को बाबा फरीद शकरगंज रहमतुल्लाह अलैह।

10 मोहर्रम को इमाम हुसैन रदिअल्लाहो तआला अन्हो।

Scanned with CamScanner

14 मोहर्रम को मुस्तफा रजा खां मुफ्ती आजमे हिन्द, बरेली शरीफ।

26 मोहर्रम को बाबा ताजुद्दीन औलिया, नागपुर।

26 मोहर्रम को मोहसिने मिल्लत मौलाना हामिद अली फारुखी रह.अ. बानी मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन, रायपुर (छ.ग.)

28 मोहर्रम को सय्यद अशरफ जहांगीर सिमनानी, किछौछा मुकद्दसा, फैजाबाद (यू.पी.)

25 सफर को आला हजरत इमाम अहमद रजा फाजिले बरेलवी।

28 सफर को मुजद्दिदे अलफेशानी सरहन्दी।

रबिउल अव्वल :

5 रबिउल अव्वल को हजरत अलाउद्दीन साबिर कलयर शरीफ।

12 रबिउल अव्वल को रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम।

15 रबिउल अव्वल को हजरत बू अली शाह क लन्दर।

Scanned with CamScanner

रबिउल आखिर :

11 रबिउल आखिर को गौसूल आजम हजरत शेख अब्दुल कादिर जिलानी रदिअल्लाहो तआला अन्हो (ग्यारहवी शरीफ) ;

16 रबिउल आखिर को हजरत निजामुद्दीन औलिया, देहली।

26 रबिउल आखिर को हजरत खान बाबा, रायपुर (छ.ग.)

जमादुल अव्वल :

1 जमादुल अव्वल को मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हबीबुर्रहमान र.अ. धामनगर (उड़ीसा)।

जमादुल आखिर :

1 जमादुल आखिर को हाफिजे मिल्लत हजरत मौलाना अब्दुल अजीज रहमतुल्लाह अलैह बानी अशरफिया यूनिवर्सिटी मुबारकपुर, आजमगढ (यू.पी.)

24 जमादुल आखिर को मौलाना महबूब अली खां, बम्बई।

Scanned with CamScanner

रजब :

6 रजब को हजरत मोईनुद्दीन चिश्ती ख्वाजा गरीब नवाज, अजमेर शरीफ।

14 रजब को सैय्यद सालार मलऊद गाजी, बहराईच शरीफ।

16 रजब को हजरत मोहद्दिसे आजमें हिन्द, किछौछा शरीफ।

22 रजब को इमाम जाफर सादिक रदिअल्लाहो तआला अन्हो (कुन्डे की फातेहा)।

शाबान :

8 शाबान को याकूब अलैहिस्सलाम की फातेहा।

14 शाबान को रसूले पाक और हजरत अवैस करनी रदिअल्लाहो अन्हो और घर के तमाम मर्हुमीन के नाम फातेहा दिलाये (शबेबरात)।

रमजान शरीफ :

16 रमजान को नसीरुद्दीन चिराग, देहलवी।

17 रमजान को शहिदाने बद्र के नाम।

21 रमजान को हजरत अली रदिअल्लाहो तआला अन्हो।

Scanned with CamScanner

शव्वाल :

1 शव्वाल ईद के दिन कासिम, तय्यब व ताहिर रदिअल्लाहो तआला अन्हो

6 शव्वाल को ख्वाजा उस्मान हारुनी रदिअल्लाहो तआला अन्हो।

ज़िकाअदा :

9 जिकाअदा को शाह भिखारी रहमतुल्लाह अलैह।

ज़िलहिज्जा :

2 जिलहिज्जा को शदरुश शरीआ मौलाना अहमद अली, घूसी।

3 ज़िलहिज्जा को मौलाना जियाउद्दीन मदनी रहमतुल्लाह अलैह।

10 जिलहिज्जा को बकरईद के दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम और इस्माईल अलैहिस्सलाम।

इस तरह और भी औलिया एकराम की तारीखों पर बराबर फातेहा दिलाते रहना चाहिए। क्योंकि बराबर फातेहा दिलाते रहने से रोजी कुशादा होती है और इन्सान हर आफतों से महफूज रहता है। कारोबार में बर्कत होती है। इसाले सवाब से मर्हुमीन के अजाबे कब्र में कमी होती है और रहमतों का नुलूल होता है।

Scanned with CamScanner

सवाब पहुंचाने का तरीका

सवाब पहुंचाने के कई तरीके हैं। आदमी चाहे खुद कलाम पाक वगैरह पढ़े या पढ़ाए उनके नाम से गरीब यतीम को दे, नेक कामों में लगाए, इन सबका सवाब पहुंचता है। कुछ लोग तीजा, दसवां, बीसवां, चालीसवां, सालाना-बर्सी वगैरा को नहीं मानते, जबकि यह सब सवाब पहुंचाने के जरिये हैं, तीजा वगैरा करने से उनको सवाब पहुंचता है। फातेहा दरुद मिलाद की महफिल बराबर करने से खुशहाली और बर्कत रहती है जिसका एहसास बाद में होता है।

शबेकद्र की फजीलत

शबेकद्र किस कद्र अहम रात है उसकी शाने मुबारक में अल्लाह तआला ने एक पुरी सूरह कद्र जिसे इन्ना अनजल्ना कहते हैं उतारी है। इस रात की इबादत को एक हजार महीने की इबादत से भी अफजल करार दिया गया है। एक हजार महीनों में 83 साल 4 माह होते हैं, यानि जिसने जिंदगी में सिर्फ एक बार भी शबेकद्र को पाया अगर खूलुस नियत और सच्चे दिल से इस रात में इबादत की तो यह तौबा इस्तिग्फार किया तो उसने 83 साल 4 महिने से ज्यादा की इबादत किया।

Scanned with CamScanner

शबेकद्र के वजाएफ और आमाल

मौलाए काएनात हजरत अली मुश्किल कुशा कर्मुल्लाह वज्जहुल करीम का इर्शाद है जो कोई सूरह कद्र को शबेकद्र में 7 बार पढता है। अल्लाह उसे हर बला से महफूज फर्मा देता है और 70 हजार फरिश्ते उसके लिये जन्नत की दुआ करते हैं। इसके अलावा आम दिनों में जो कोई जुमा के दिन जुमा से पहले तीन बार सूरह कद्र पढता है अल्लाह तआला उस दिन के तमाम नमाज पढने वालों की तादाद के बराबर पढने वाले के नाम नेकिया लिखता है। (नुज्हतुल मजलिस)

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इन्ना अंजल्नाहो फीलैलतिल कद्र वमा अद्राका मा लैलतुलकद्र लैलतुल कद्र खैरुम मिन अल्फे शहर तनज्जलुल मलाइकतो वर्रुहो फिहा बेइज्ने रब्बेहिम मिन कुल्ले अम्र सलामुनहिया हत्ता मतलइल फज्र (पारा 30, रुकु 22)

जानवर ज़बह करने की दुआ

नवैतो अन अज्ब ब.ह. हाजल हैवानो बेहै सो युखरेजो अन हुद्दोमुल मसफुहो व त कुनु लहमोहू हलालल ले जमीइल मोअमेनीन वलमोमेनात बिस्मिल्लाहे अल्ला हो अकबर, बिस्मिल्लाहे अल्ला हो अकवर, बिस्मिलाहे अल्ला हो अकबर।

Scanned with CamScanner

दुआए अकीकह

अल्लाहुम्म हाजिही अकीकतुब्नी फुलानिन द मुहा बि द मिही व लहमुहा बि लहमिही व अजमुहा बि अजमिही व जिलदुहा बिजिल्दिही व शअरुहा बि शअरिही अल्लाहुम्मज अल्हा फिदाअल लि इब्नी मिन्नार बिस्मिल्लाहे अल्लाहु अकबर।

अगर बाप जिबह करने वाला हो तो ऐसा कहे वरना दुसरा इब्नी की जगह फलां बिन फलां यानी उस लडके का नाम वालिद के नाम के साथ लें।

अगर लड़की का अकीकह हो तो उसको यूं पढ़ें :- अल्लाहुम्म हाजिही अकीकतु बिन्ती कुला दमुहा बि दमिहा व लहमुदा बि लहमेहा व अजमुहा बि अजमेहा व जिल्दुहा बि जिल्देहा व शअरोहा बि शअरिहा अल्लाहुम्मज अल्हा फिदाअल लि बिन्ती मिन्नार-बिस्मिल्लाहे अल्ला हुअकबर।

नियते कुर्बानी

इन्नी वज्जहतु वजहि य लिल्लजी फतरस्समावाति वल अर द हनीफंव व मा अना मिनल मुशरिकीन। इन्न सलाति व नुसुकी व महया य व म माती लिल्लाहि रब्बिल आ ल मी न। ला शरी

क लह् व विजालि क उमिर्तु व अना मिनल मुस्लिमीन । अल्लाहुम्म मिन्क व ल क बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर। पढकर जिबह करें। जिबह के बाद अगर अपनी तरफ से कुर्बानी की है तो इस तरह कहें – अल्लाहुम्म तकब्बल्हु मिन्नी कमा तकब्बल त मिन खलीलि क सय्यिदिना इब्राही म व हबीबि क सय्यिदिना मुहम्मदिन अलैहिस्सलातु वस्सलाम।

अगर किसी दुसरे के नाम से करें तो लफ्ज मिन्नी की जगह मिन फलां इब्न फलां कहे (जैसे मुहम्मद मुशाहिद हुसैन कादिरी इब्न एजाज हुसैन कादिरी)।

दुरुदे जुम्आ

सल्लल्लाहु अलन नबीइल उम्मीये व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातवं सलामन अलै क या रसूलल्लाहजो शख्स हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत रखे, तमाम जहान से ज्यादा हुजूर की अजमत दिल में जमाए, हुजूर की शान दुरुदे मक्बूल को हर रोज या बरोजे जुम्आ बाद नमाजे फज्र या बाद नमाजे जुम्आ या अस्र मदीना तय्यिबा की जानिब (यानी किबला से दाहिने हाथ तिर्छे) दस्त बस्ता खडे होकर पढ़े बेशुमार सवाब पाए। इस दुरुद

Scanned with CamScanner

को एक बार पढने से 100 दुरुद का सवाब मिलता है। तो जिसने 100 बार पढा गोया दस हजार मरतबा दुरुद पढने का सवाब पाया। बेहतर है कि नमाजे जुम्आ दो चार दस बीस आदमी मिलकर पढें।

फजाइल व फवाइद

इसके 40 फायदे हैं जो मुअत्तबर हदीसों से साबित हैं। यहां चन्द जिक्र किये जाते हैं : 1. इस दुरुद शरीफ के पढने वाले पर खुदाए तआला तीन हजार रहमतें नाजिल फरमाएगा। 2. उस पर दो हजार बार अपना सलाम भेजेगा। 3. पांच हजार नेकियां उसके नामए आमाल में लिखेगा। 4. पांच हजार गुनाह मुआफ फरमाएगा। 5. उसके माथे पर लिख देगा कि यह दोजख से आजाद है। 6. अल्लाह उसे कयामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा। 7. उसके माल में तरक्की और बरकत देगा। 8. उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत देगा। 9. दुश्मनों पर गल्बा देगा। 10. दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा। 11. किसी दिन ख्वाब में बरकते जियारते अक्दस से मुशर्रफ होगा। 12. ईमान पर खातिमा होगा। 13. कयामत में हुजूर की शफाअत नसीब होगी। 14. अल्लाह तआला उससे ऐसा राजी होगा कि कभी नाराज न होगा।

Scanned with CamScanner

दुनिया और आखिरत के लिए कामयाबी की दुआ

1. पहले दाहिना कदम रखकर मस्जिद में दाखिल हों और यह दुआ पढे – अल्लाहुम्मफ तहली अबवा ब रहमति–क।

2. पहले बांया कदम मस्जिद से निकाले और यह दुआ पढें – अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकमिन फदलि क व रह् मतिका।

3. चांद देखकर यह दुआ पढ़ें – अल्लाहुम्मा अहिल्लह् अलैना बिल अ म ने वल ईमाने वस्सलामति वल इस्लाम रब्बी व रब्बूकल्लाहु या हिलाल।

4. जब बुरा ख्वाब देखें और जाग जाएं तो तीन बार अऊजु बिल्लाहि मिनश्शयता निर्रजीम पढ़ें और तीन बार बायें तरफ थूकें फिर सोना चाहें तो करवट बदल कर सोयें।

5. जब आसमान से तारा टूटता देखें तो निगाह नीची कर लें और यह दुआ पढ़ें – माशा अल्लाहु लाहौल वला कू वत इल्ला बिल्लाह।

Scanned with CamScanner

6. अंधे, लंगडे और कोढी वगैरह किसी मुसीबत जंदा को देखें तो यह दुआ पढें मगर आशोवे चश्म (आंख उठना) जुकाम और खारिश के मरीजों को देखकर यह दुआ न पढें कि इन बीमारियों से बदन की इसलाह होती है। वह दुआ यह है – अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी आफानी मिम्मबतला के विही फददलनी अला कसीरिम मिम्मन ख ल क तफदीला।

7. जब सोना चाहें तो यह दुआ पढें – अल्लाहुम्म बिइस्मिक अमृतु व अह्या और दूसरे सभी अवराद से फारिग होकर सूरये काफिरुन पूरी पढें और खामोश सो जाएं। उसके बाद अगर बातचीत की जरुरत पड जाये तो दोबारा फिर पूरी सूरह पढ लें।

8. जब नींद से बेदार हो (जागे) यह दुआ पढें – अलहम्दु लिल्लाहिल्लजी अह्याना बअ् दमा अमातना व इलयहिन्नुशूर।

9. जहरीले जानवरों से हिफाजत की दुआ – अऊजु बिकलिमा– तिल्लाहित्ताम्मति मिन शररिमा खलक। इस दुआ को जो सुबह के वक्त पढ ले तमाम दिन जहरीले जानवरों से महफूज रहेगा और जो शाम को पढ ले वह सुबह तक अमान में रहेगा।

Scanned with CamScanner

10. कर्ज से सुबुक्दोश (उत्तीर्ण) होने के लिए दुआ – अल्लाहुम्म इकफिनी बि हलालि क अन हरामि क व अगनिनी बिफजलि क अम्मन सिवा क अन हरामि क व अगनिनी बिफजलि क अम्मन सिवा क। हर नमाज के बाद ग्यारह–ग्यारह बार और सुबह व शाम सौ–सौ बार रोजाना अव्वल व आखिर दुरुद शरीफ। इसी दुआ की निस्बत मौला अली करमल्लाहु तआला वजहूहुल करीम ने फरमाया कि अगर तुझ पर पहाड के बराबर भी कर्ज होगा। तू उसे अदा कर देगा।

11. बरकते रिज्क के लिए अमल – सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहि अजीम व बिहम्दिही अस्तगफिरुल्लाह रोजाना तुलूअे सुबह् के साथ ही सौ बार अव्वल व आखिर दुरुद शरीफ के साथ पढा करें। बेहतर यह है कि नमाजे फज्र के पहले पढें। वरना अगर जमाअत काइम हो जाए तो बादे नमाज। बहर सूरत सूर्य निकलने से पहले पढ लें।

12. बाजार में दाखिल हो तो यह दुआ पढें – ला इलाह इल्लल्लाहु वह दहू ला शरीक लहू लहूल्मुल्कु व लहुल्हम्मु युहयी व यूमीतु व हु व हय्युल्ला यमूतु बियदिहिल खैरु व हु व अला कुल्लि शैइन कदीर।

Scanned with CamScanner

13. नया लिबास (वस्त्र) पहने तो यह दुआ पढ़ें – अल्हम्दु लिल्लाहिल्लजी कसानी मा उवारी विही औरती व अ त जम्मुल बिही व फोहयाती।

14. आईना देख कर पढ़ें – अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहुम्मा कमा हस्सन त खल की फहस्सिन खुलकी।

15. जब किसी को रुखसत करें तो यह पढ़ें – अस्तौ दि उल्लाह दी न क व अमा न त क व खवाती म अ म लि क सफर में जाते वक्त अहबाब व अइज्जा से रुखसत होते वक्त कहें – अस्तौदि उ कुमुल्ला हल्लजी ला युजीउ व दाइअह्।

16. वक्ते सफर यह दुआ पढ़ें – अल्लाहुम्म बि क असूलु व बि क अह्लु व बि क असीरु 2 जब सफर पर रवाना हो जाये तो यह दुआ पढ़ें – अल्लाहुम्म इन्न नस्अलु क फी स फ रिना हाजल बिर्रे वत्तकवा व मिनल अ म लि मा तरदा फिर यह दुआ पढ़ें – अल्लाहुम्म हव्विन अलयना हाजस्स फुरवत विअन्ना बुअूदह्ू अल्लाहुम्म अन्तर साहिबु फिस्सफरि वल खलीफतु फि ल अहलि अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बि क मिंव व असाइस्स फरिव कआ

Scanned with CamScanner

वतिल मन ज रि व सूइल मुन क ल वि फिल मालि वल अह् लि वल व ल दि।

17. सफर से वापसी पर यह दुआ पढें – आइवू न ताइबू न आविदू न लिरब्बिना हामिद न।

18. शहर में दाखिल दोते वक्त पढें – अल्लाहुम्म वारिक लना फीहा तीन बार अल्लाहुम्मरजु कना जनाहा व हब्बिना इला अहलिहा व हब्बिब सालिही अहलिहा इलयना।

19. जब मंजिल पर पहुंचे यह दुआ पढे – रब्बि अनजिलनी मूनजलम्मुबारकन व अन त खयरुल्मुनजिलीन।

20. आंधी और अंधेरे के वक्त कीं दुआ पढें – अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलु क मिन खयरि हाजिहिररीहि, व खयरि मा फीहा व खयरी मा उमिरत विहिव नऊ जु बि क मिन शर्रिहाजिहिर्रीहि व शर्रिमा फीहा व शर्रीमा उमिरत विहि।

21. जो शख्स इस दुआ को 3 बार पढेगा उसे सांप ना काटेगा। साल भर तक। (या मुए बल सांप ना काटे)

Scanned with CamScanner

पानी पीने का बयान

पानी बिस्मिल्लाह पढकर दाहिने हाथ से पीयें, बायें हाथ से पीना शैतान का काम है और तीन सांस में पीये, हर मरतबा बरतन की मुंह से हटाकर सांस लें। पहली और दूसरी मरतवा एक-एक- घूंट पीये और तीसरी सांस में जितना चाहे पी डाले, खडे होकर पानी हरगिज न पीये। हदीस शरीफ में है कि जो शख्स भूलकर ऐसा कर डाले वह कै कर दे और पानी को चुस कर पीये गट-गट वडे घूंट न पीये। जव पी चुके तो अलहम्दु लिल्लाह कहे। पीने के बाद गिलास वगैरह का बचा पानी पीना मना है इसी तरह लोहे के टोटी से भी पानी पीना मना है मगर जवकि देख लिया हो कि उनमें कोई चीज नहीं है तो हरज नहीं।

लिबास (पहनावा) का बयान

इतना लिबास जरुर पहने कि जिससे सत्रे औरत हो जाए। औरतें बहुत बारीक और चुस्त कपडा हरगिज न पहने कि जिससे बदन के हिस्से जाहिर हो कि औरतों को ऐसा कपडा पहनना हराम है और मर्द भी पाजामा या तहबन्द इतना हल्का न पहने की जिसमें वदन की रंगत झलके और सतर (छुपाव) न हो कि मर्दों को भी ऐसा पाजामा व तहवन्द पहनना

Scanned with CamScanner

हराम है और धोती न पहने कि धोती पहनना हिन्दुओं का तरीका है और उससे सतर भी नहीं होता कि चलने में सन का पिछला हिस्सा खूल जाता है। मुसलमानों को इससे बचना जरूरी है और नीकर जांघिया हरगिज न पहने कि हराम है। लेकिन तहबन्द वगैरा के नीचे पहने तो कोई हर्ज नहीं।

जीनत (सिंगार) का बयान

मर्दों को सोने की अंगूठी पहनना हराम है और चांदी की सिर्फ एक नग अंगूठी का एक नग वाली जो वजन में साढे चार माशा से कम न हो पहन सकते हैं। और कई अंगूठी या एक अंगूठी या कई नग वाली या छल्ले नहीं पहन सकते कि नाजाइज है और औरतें सोना चांदी को हर किस्म की अंगूठियां और छल्ले पहन सकती हैं लेकिन दूसरी धातुओं की अंगुठियां जैसे तांबा, पीतल, लोहा और जस्ता वगैरह तो मर्द व औरत दोनों के लिए नाजाइज। लड़कियों को सोना चांदी के जेवर पहनना जाइज है। लड़कों को हराम है। पहनाने वाले गुनाहगार होंगे। इसी तरह लडकियों के हाथ पांव में मेंहदी लगाना जाइज है और लडकों के हाथ पांव में जीनत के लिए मेंहदी लगाना नाजाइज है।

Scanned with CamScanner

सोने का बयान

मुस्तहब यह है कि बावजू सोये और कुछ देर दाहिनी करवट पर दाहिने हाथ को रुखसार (गाल) के नीचे रखकर किबला की तरफ मुंह करके सोये फिर उसके बाद बायें करवट, पर पेट के बल न लेटें। हदीस शरीफ में है कि इस तरह लेटने को अल्लाह तआला पसन्द नहीं फरमाता और पांव पर पांव रखना मना है। जबकि चित लेटा हो और यह उस सूरत में है जब कि तहबन्द पहने हो और एक पांव खडा हो कि इस तरह बेसत्री (बेपरदगी) का अंदेशा (खतरा) है। और ऐसी छत पर सोना मना है कि जिस पर गिरने का कोई रोक न हो और लड़का जब 10 साल का हो जाए तो अपनी मां या बहन वगैरह के साथ या मर्दों के साथ भी न सोये और दिन के शुरु हिस्सा में सोना या मगरिब व इशा के दरमियान सोना मकरुह है और हमारे मुल्क (देश) में उत्तर जानिब पांव फैलाकर सोना बिला शुबहा जाइज है। या नाजाइज समझना गलती है और जब सोकर उठे तो दुआ पढ़ें अलहम्दु लिल्लाहिल्लजी अहयाना बाद मा अमा त ना व इलैहिन्नूशूर।

Scanned with CamScanner

फातिहा का आसान तरीका

पहले तीन या सात बार दरुद शरीफ पढे फिर कम से कम चारो कुल, सुरए फातिहा और अलिफ लाम्मीम से मुफलिहून तक पढें फिर आखिर में तीन या पांच या सात बार दुरुद शरीफ पढें और बारगाहे इलाही में हाथ उठाकर यूं दुआ करे – या अल्लाह हमने जो कुछ दुरुद शरीफ पढा है और कुर्आन मजीद की आयते तिलावत की है उनका सवाब (अगर खाना या शीरनी हो तो इतना और कहें कि इस खाना और शीरनी का सवाब) मेरी तरफ से हुजूर सरवरे काईनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को नज्र पहुंचा दे फिर उनके वसीले से तमाम अंबियायेकिराम अलैहिमुस्सलाम को सहाबा और तमाम औलिया व उलमा को अता करना (फिर अगर किसी खास बुजुर्ग को सवाब पहुंचाना हो तो उनका नाम खुसुसियत से ले जैसे यू कहें कि) खुसूसन हजरते गौसे पाक रजियल्लाहु तआला अन्हु या ख्वाजिये अजमेरी रजियल्लाहु तआला अन्हु को नज्र पहुंचा दे और फिर तमाम मुमिनिन व मूमिनात की अरवाह को सवाब अता फरमा । और किसी आम आदमी को सवाब पहुंचाना हो तो उनका जिक्र खुसुसियत से करें जैसे यूं कहे कि खुसुसन हमारे वालिद, वालिदा या दादा, दादी या नाना, नानी की रुह को सवाब पहुंचा दे आमीन या रब्बुल आलमीन बिरहमति क या अरहमर राहिमीन।

Scanned with CamScanner

-: मुनाजात :-

रोजाना सुबह व शाम या हर नमाज के बाद
इसको पढ लिया करें। बेहतर है।

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊं नजए की तकलीफ को
शादीए दीदारे हुस्ने मुस्तफा का साथ हो

या इलाही गोर तीरह की जब आये सख्त रात
उनके प्यारे मुंह की सुब्हे जाफिजा का साथ हो

या इलाही जब पड़े महशर में शोरे दारो गीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

या इलाही जब जुबाने बाहर आयें प्यास से
साहबे कौसर शहे जूदो अता का साथ हो

या इलाही सद महरी पर हो जब खुर्शीदे हश्र
सय्यिदे बे साया के जिल्ले लिवा का साथ हो

या इलाही गर्मी-ए-महशर से जब भड़के बदन
दामने महबूब की ठण्डी हवा का साथ हो

या इलाही नाम-ए-आमाल जब खुलने लगे
ऐब पोशे खल्क सत्तारे खता का साथ हो

या इलाही जब बहे आखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज होटों की दुआ का साथ हो

या इलाही जब हिसाबे खन्दाए बेजा रुलाए
चश्मे गिरयाने शफीए मुरतजा का साथ हो

या इलाही रंग लायें जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नजरों की हया का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले गम जुदा का साथ हो

या इलाही जो दुआएं नेक हम तुझ से करें
कुदसियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो

या इलाही जब रजा ख्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदारे इश्के मुस्तफा का साथ हो

Scanned with CamScanner

नक्शा औकाते नमाज़ व ताअदादे रकअत

वक्त नमाज	सुन्नते मुअक्किदह	सुन्नते गैर मुअक्किदह	फर्ज	वाजिब	नफ्ल	कुल तादाद रकअत
फज्र	2	✪	2	✪	✪	4
जुहर	6	✪	4	✪	2	12
अश्र	✪	4	4	✪	✪	8
मगरिब	2	✪	3	✪	2	7
इशा	2	4	4	3	4	17
जुमा	10	✪	2	✪	2	14

इस नक्शा को देखकर
ताअदादे रकअत अच्छी तरह
याद कर लें कि किस वक्त
कितनी रकअत पढ़नी है।
कद्तम् बि औनिही तआला सुम् बिऔन
रसूलहुल्आला अलैहित्तहय त दस्सना

Scanned with CamScanner

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

نور قرآن

الٓمٓ	حٰمٓ عٓسٓقٓ	نٓ
الٓمٓصٓ	حٰمٓ	يٰسٓ
كٓهٰيٰعٓصٓ	قٓ	اٰمٓيٰنٓ

अलिफ्-लाम्-मीम्	हा मीम् ऐन सीन काफ	नून
अलिफ्-लाम्-मीम् साद्	हा मीम्	यासीन्
काफ् हा-या ऐन् साद्	काफ	आमीन्

इसके देखने वालों की तमाम मुश्किलें आसान हो जाएंगी, सुबह देख कर जो काम शुरु किया जाएगा पूरा होगा, रोज़ी रोजगार में बरकत होगी, इम्तेहान व नोकरी में कामयाबी मिलेगी और गैबी तरीकों से रिज्क की दौलत आने लगेगी।

इंशाअल्लाह तआला

Scanned with CamScanner

लड़कियों के रिश्ते की दुआ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّخَدِيْجَةَ
وَهَبْ لِيْ اِلٰى زَوْجِيْ بِحُرْمَةِ رَبِّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا
وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्येदना व मौलाना मुहम्मदिन व खदीजतिन व हब विवनी इला जौजे बेहूरमतिन रब्बेना हव लना मिन अज वा जेना व जुर्रे यातेना कुर्रत आयोनिव वजअलना लिल मुत्तकीना एमामन०

० हर नमाज के बाद अव्वल व आखिर दरुद शरीफ के साथ यह दुआ ग्यारह मरतवा पढ़ें इन्शाअल्लाह तआला नेक रिश्ता पाएं।

नक्श यह है ...

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ اللّٰهُمَّ بِحَقِّ تَوْلَكَ هٰذَا
لڑکی کا نام ..... بِحُرْمَةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ اِنْ رُزِقْتُ
بنت ..... زوجا موافقا غیر مخالف بِحَقِّ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ ماں کا نام .....

जीलानी बुक डिपो की

हिन्दी मतबुआत

नं०	किताब	लेखक	मूल्य
1	चालीस अहादीस शफाअत	इमाम अहमद रजा बरेलवी	7-
2	तमहीदे ईमान	इमाम अहमद रजा बरेलवी	20-
3	सवानेह आला हजरत	इमाम अहमद रजा बरेलवी	40-
4	हदाईके बख्शिश	इमाम अहमद रजा बरेलवी	60-
5	तकदीर व तदबीर	इमाम अहमद रजा बरेलवी	15-
6	ताअजीमी सज्दा हराम है	इमाम अहमद रजा बरेलवी	10-
7	रिसाला ताअजीयादारी	इमाम अहमद रजा बरेलवी	12-
8	दाअवते मय्यत	इमाम अहमद रजा बरेलवी	5-
9	जन्नती जेवर	अल्लामा अब्दुल मुस्तफा आजमी	90-
10	इस्लामी अख्लाक ओ आदाब	मुफ्ती अमजद अली	80-
11	बहारे शरीअत	मुफ्ती अमजद अली	240-
12	हमारे गौसे आजम	मुहम्मद अहमद	80-
13	दाअवते फिक्र	मुहम्मद अहमद	30-
14	शरह सलामे रजा	मुहम्मद अहमद	6-
15	सच्ची हिकायत मुकम्मल	अबुन्नूर मोहम्मद बशीर	160-
16	मजमुआ आअमाले रजा	काजी अब्दुर्रहीम बस्तवी	120-
17	कानूने शरीअत मुजल्लद	काजी शमसुद्दीन जाअफरी	120-
18	पाकिस्तानी पन्ज सूरह		100-
19	आसान तरीक-ए-फातिहा		7-
20	आसान नमाज मअ तरीक-ए-फातिहा (पाकेट)		8-
21	औरतो की नमाज मअ नियत नामा		15-
22	जीलानी सच्ची नमाज		15-
23	जीलानी सच्ची नमाज (पाकेट)		8-
24	खुशबू-ए-मदीना (पाकेट)		12-

جیلانی بک ڈپو
۵۲۲ مٹیا محل جامع مسجد دہلی ۶

JILANI BOOK DEPOT
PUBLISHER & DISTRIBUTERS
522, Walled Kalan Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Mob: 9350046577

Scanned with CamScanner

Sachchi Namaz

JILANI BOOK DEPOT

1229, CHURI WALAN, JAMA MASJID, DELHI-110006

011-23256577,+919350046577,9212346577,7982492755

jilani.book.depot@gmail.com,jilanigraphic@gmail.com

jilanibks@gmail.com Website: www.jilanibooks.com

JILANI BOOK DEPOT

+91 9350046577,9871209285

For Online Shop Visit: amazon

a_subhan9871

Rs 30/-

ہر قسم کی کتابیں مفت پڑھنے و خریدنے کے لئے ہماری ویب سائٹ پر آئیں

Scanned with CamScanner